साक्षी लोधी
नरसिंहपुर, मध्यप्रदेश

स्त्रियों के लिए नहीं बना है स्वर्ग

पुरुष सत्ता की जड़ें धरती को लांघ कर
पहुंच चुकी हैं स्वर्ग तक
हाँ वही स्वर्ग जहाँ रहती हैं अप्सराएँ
जहाँ अच्छी तरह रखा गया है ध्यान
पुरुषों की सुख सुविधाओं का
और वहाँ पर भी बनाई गई हैं
स्त्रियाँ मनोरंजन का विषय
इस दोगले पक्षपाती समाज ने
स्वर्ग को भी नही रहने दिया
अपनी ओछी मानसिकता से अछूता
वहाँ पर भी लोगों ने स्त्रियों के प्रति
अपनी मानसिकता के सबसे
निचले स्तर का प्रमाण दिया
मुझे लगता है कि ये सदियों पहले से
बुनी गई सोची समझी साजिश है
स्त्रियों के लिए
मैं कहती हूँ वे काम जिन्हें करके
मिलता है स्वर्ग
करने दिए जाए सिर्फ पुरुषों को
क्योंकि वहां पर
नहीं हैं तुम्हारे लिए सुविधाएं
सुनो ! स्त्रियों के लिए नहीं बना है स्वर्ग

मैं बनना चाहुँगी एक अल्हड़ नदी

मैं बनना चाहूंगी एक अल्हड़ नदी
नहीं रहूँगी मौन
जैसे सदियों से रही आई हैं स्त्रियाँ
मैं नहीं चलूंगी सिमटकर , चलूंगी फैलकर
समेटुँगी वो सारी जमीन
जो मेरे हिस्से की छीन ली गई थी
करूंगी फिर से उसे अपने नाम
मैं गिरुँगी गूँजते हुए बड़े बड़े पहाड़ों से
अपने होने का प्रमाण देती हुई
चट्टानों को चीरते हुए , बहूँगी तीव्र प्रवाह से
जिसे रोकना न हो किसी के वश मैं
जाऊंगी गाँव गाँव ,शहर शहर ,देश और
विदेश भी
किंतु मैं नहीं मिलुँगी उस सागर से
जिसकी अथाह गहराई में पलते हैं
रूढ़ीवादी
दोगले समाज की तरह
भद्दे षडयंत्र जो छीनकर किसी से
बनाते हैं खुद का अस्तित्व
जिस तरह छीनता हे एक पुरुष एक स्त्री
का अस्तित्व और सँवारता है खुद को
और दफना देता है उसके होने के नामों निशान
दहलीज के उस पार
मैं नहीं खोना चाहती अपना अस्तित्व
और मैं कहूंगी अपनी सभी बहनों से
चलो मिलते हैं आपस में बनाते हैं
अपना खुद का सागर